पाठ-3

भारत में कम्पनी राज्य का विस्तार

जिस समय अंग्रेज भारत के उत्तर पूर्वी भाग में अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे थे, उसी समय दक्षिण भारत के मैसूर, हैदराबाद तथा मराठा राज्य के शासक आपसी युद्ध में व्यस्त थे। देश के शासक प्रायः अपनी सीमा के विस्तार या उत्तराधिकार के लिए संघर्षरत थे। जो राजा या शासक अपने को कमजोर समझते, वे अंग्रेजों की शरण में चले जाते, जो शासक अंग्रेजों से मदद माँगने के लिए जाते उन्हें अंग्रेज सैनिक मदद देते। अंग्रेज बदले में उस व्यक्ति से जीते हुए राज्य का कुछ भाग व अन्य रियायतें लेते। भारतीय शासक अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बनकर रह गये।

अंग्रेज लगभग 90 वर्षों में (1764 ई0 से 1856 ई0) भारत के अधिकांश हिस्से पर राज्य करने लगे।

सोचिए और बताइए-ईस्ट इण्डिया कम्पनी, कैसे भारत व्यापार करने आई थी? कैसे इतने बड़े देश पर अपना राज्य व अधिकार बढ़ा सकी ?
अंग्रेजों ने विभिन्न नीतियों के अन्तर्गत जैसे- वेलेजली की सहायक संधि नीति, डलहौजी की विलय नीति, कुशासन का आरोप लगाकर राज्य हड़पना, युद्ध में पराजित करके शासकों से लाखों रुपये वार्षिक लेना व फूट डालो और राज करो जैसी कूटनीतियों के जरिए भारत के राज्यों को कम्पनी राज्य में मिलाया।

हैदरअली

मैसूर

विजयनगर साम्राज्य के पतन के पश्चात् से ही मैसूर राज्य ने अपनी स्वाधीनता को बनाये रखा था। अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हैदर अली ने मैसूर की सेना में एक साधारण अधिकारी के रूप में कार्य प्रारभ्भ किया। शीघ्र ही वह अपनी कुशाग्र बुद्धि द्वारा सेना में उच्च पद तक पहुँच गया। 1761 ई0 में उसने मैसूर राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। उसने बिदनूर, सुदा, सेदा, कन्नड़, और मालाबार के इलाकों को जीत लिया। मालाबार की जीत से हैदरअली की सत्ता का समुद्र तट तक विस्तार हो गया। इससे अंग्रेजों का आशंकित होना स्वाभाविक था। दोनों के मध्य संघर्ष अवश्यम्भावी था। अतः 1768-1792 ई. के मध्य मैसूर एवं अंग्रेजों में निम्नलिखित तीन युद्ध हुए।

प्रथम मैसूर युद्ध (1768ई0-1769ई0)

हैदरअली को आगे बढ़ने से रोकने के लिए अंग्रेजों ने हैदरअली के विरुद्ध निजाम, मराठों और कर्नाटक के नवाब का एक सम्मिलित मोर्चा बनाया, किन्तु हैदरअली विचलित नहीं हुआ। उसने मराठों को धन देकर तथा निजाम को प्रदेश का प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया। इसके पश्चात् उसने कर्नाटक पर आक्रमण कर दिया। डेढ़ वर्ष तक युद्ध होता रहा। हैदरअली ने मद्रास (चेन्नई) को घेर लिया। 4 अप्रैल 1769 ई. को हैदरअली तथा अंग्रेजों के मध्य संधि हो गयी। इस संधि के द्वारा जीते हुए प्रदेशों को एक दूसरे को लौटा दिया गया तथा विपत्ति में एक दूसरे की सहायता करने का वचन भी दिया गया।

अठारहवीं शताब्दी में भारत

द्वितीय मैसूर युद्ध (1780-1784 ई.)

1771 ई. में मराठों ने हैदरअली पर आक्रमण कर दिया, परन्तु 1769 ई. में हैदरअली एवं अंग्रेजों के मध्य हुई संधि के अनुसार अंग्रेजों ने हैदरअली की सहायता नहीं की। इससे हैदरअली ने निजाम तथा मराठों से मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा बनाया। जुलाई 1780 ई. में हैदरअली ने कर्नाटक पर आक्रमण कर दिया तथा कर्नल बेली के अधीन अंग्रेजी सेना को पराजित कर अर्काट जीत लिया। इसी बीच अंग्रेजों ने निजाम तथा मराठों को हैदरअली से अलग कर दिया। हैदरअली ने इस स्थिति का सामना किया, परन्तु नवम्बर 1781 ई. में वह पराजित हुआ।1782 ई0 में हैदरअली ने अंग्रेजों को बुरी तरह हराया। 6 दिसम्बर 1782 ई. को हैदरअली की मृत्यु हो गयी। हैदरअली की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र टीपू सुल्तान ने राज्य का उत्तरदायित्व सँभाला। टीपू ने एक वर्ष तक

युद्ध जारी रखा। अन्त में दोनों पक्षों ने मार्च, 1784 ई. में संधि कर ली और दोनों ने एक दूसरे के जीते हुए प्रान्त लौटा दिये।

टीपू सुल्तान

तृतीय मैसूर युद्ध (1790-1792ई.)

अंग्रेजों का मैसूर के विरुद्ध तीसरा टकराव 1790 ई. में हुआ। टीपू कोचीन रियासत को अपने अधीन मानता था। त्रावणकोर के महाराजा ने डचों से कोचीन रियासत में स्थित जैकोटे तथा क्रगानूर मोल लेने का प्रयत्न किया था जिसके कारण टीपू ने आक्रमण कर दिया। अंग्रेजों ने त्रावणकोर के राजा के पक्ष में टीपू पर आक्रमण किया।

अंग्रेजी सेना वेल्लौर तथा अम्बूर से होती हुई बंगलौर तक पहुँच गयी, जिसे उसने मार्च 1791 ई. में जीत लिया। अंग्रेजी सेना श्रीरंगपट्टम तक पहुँच गई। अंग्रेजों ने कोयम्बटूर भी जीत लिया, परन्तु शीघ्र ही वे पुनः उसे हाथ से खो बैठे। मराठा तथा निजाम की सहायता से उन्होंने पुनः श्रीरंगपट्टम की ओर चढ़ाई की। टीपू ने इसका कड़ा विरोध किया। जब टीपू ने देखा कि युद्ध जारी रखना असम्भव है तो उसने 1792 ई. में श्रीरंगपट्टम की संधि कर ली। इस संधि के अनुसार उसे अपने राज्य का आधा भाग अंग्रेजों तथा उनके साथियों को देना पड़ा। इसके अन्तर्गत अंग्रेजों को बारामहल, डिंडीगुल तथा मालाबार मिला। टीपू को 3 करोड़ रुपया युद्ध क्षति के रूप में भी देना पड़ा। युद्ध के इस दौर में टीपू की बहुत क्षति हुई। वह अपने राज्य को पूर्णतया समाप्त होने से बहुत कठिनाई से ही बचा पाया।

1798 ई. में भारत में लार्ड वेलेजली आया जो एक साम्राज्यवादी गवर्नर जनरल था। लार्ड वेलेजली ने देशी राजाओं को अपने अधीन करने की योजना बनाई। उनकी यह योजना सहायक सन्धि कही जाती है।

रेजीडेण्ट राज्य का भ्रमण करते हुए

सहायक संधि-

सहायक संधि के अन्तर्गत देशी राजाओं पर यह दबाब डाला गया कि वे अंग्रेजों के संरक्षण में आ जायें और उसके बदले में अंग्रेजी राज्य उनकी आन्तरिक सुरक्षा एवं बाह्य शक्तियों से रक्षा करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेगा।

इस संधि को स्वीकार करने वाले शासकों को कम्पनी का आधिपत्य स्वीकार करना था।

इन शासकों को अपने खर्चे पर अंग्रेजी सेना की एक टुकड़ी रखनी पड़ती थी।

खर्च वहन न कर पाने की स्थिति में अपने राज्य का कुछ भाग कम्पनी को देना पड़ता था।

कम्पनी की अनुमति के बिना उन्हें किसी से भी युद्ध अथवा संधि करने का अधिकार नहीं था।

उन्हें अपनी राजधानी में कम्पनी सरकार का रेजीडेण्ट रखना पड़ता था जो राज्य पर निगरानी रखता था।

इस नीति के अन्तर्गत अंग्रेजों ने मैसूर, तंजौर, सूरत, कर्नाटक तथा हैदराबाद पर कब्जा किया।वेलेजली ने यह निश्चय किया कि या तो टीपू का अस्तित्व पूर्णतया समाप्त कर दिया जाये अथवा उसे अपने अधीन बना लिया जाये। इसके लिए उसने टीपू सुल्तान पर यह दोष लगाया कि वह निजाम तथा मराठों के साथ

मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध षड्यंत्र रच रहा है और विभिन्न देशों से मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध व्यवहार कर रहा है। ये सभी आरोप उसके उद्देश्य पूर्ति के लिए पर्याप्त थे। अप्रैल 1799 ई. में उसने टीपू के विरुद्ध अभियान आरम्भ कर दिया। मई, 1799 ई. को अंग्रेजो ने श्रीरंगपट्टम का दुर्ग जीत लिया और मैसूर अंग्रेजों के कब्जे में आ गया।दक्षिण भारत के इतिहास में टीपू का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। उसने अपनी वीरता, साहस तथा आत्माभिमान को कभी नहीं छोड़ा और वेलेजली की सहायक संधि का निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया। उसकी एक प्रिय उक्ति थी कि ”एक शेर की तरह एक दिन जीना बेहतर है लेकिन भेड़ की तरह लम्बी जिंदगी जीना अच्छा नहीं।“ इसी उक्ति का पालन करते हुए वह श्रीरंगपट्टम के द्वार पर लड़ता हुआ मारा गया था।

मराठों से संघर्ष

मुगल साम्राज्य की पतनावस्था में मुगलों की केन्द्रीय सत्ता निर्बल तथा प्रभावहीन हो चली थी। उधर मराठा संघ (जिसमें नागपुर के भोंसले, बड़ौदा के गायकवाड़, इंदौर के होल्कर तथा ग्वालियर के सिन्धिया मुख्य सरदार थे तथा जिनका प्रमुख पेशवा होता था) ने उत्तर भारत की ओर अपना प्रभाव विस्तृत कर लिया था, परन्तु अफगान शासक अहमदशाह अब्दाली ने जो भारत पर अधिकार करना चाहता था, मराठा संघ की सेनाओं को सन् 1761 में पानीपत के तृतीय युद्ध में पराजित किया जिससे मराठा शक्ति बहुत क्षीण हो गयी।मराठों के प्रमुख नेताओं का ध्यान अब पूना (पुणे) पर केन्द्रित होने लगा और पेशवा (प्रधानमंत्री पद पाने के लिए उनमें आपसी होड़ होने लगी। ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं कि अंग्रेजों को मराठा सरदारों के आपसी कलह का लाभ उठाने का अवसर मिल गया।सन् 1772 ई0 में पेशवा माधव राव की मृत्यु के बाद उसका भाई रघुनाथ राव पेशवा बनना चाहता था परन्तु उसने पद की लालसा में अपने भाई के बेटे नारायण राव का वध करवा दिया। उसके इस कार्य से मराठा नाराज हो गये और नारायण राव के नवजात पुत्र को पेशवा की गद्दी पर बैठा दिया। उसकी सुरक्षा और शासन संचालन के लिए नाना फड़नवीस की देखरेख में एक संरक्षण परिषद का गठन किया।रघुनाथ राव अंग्रेजों की शरण में चला गया और उसने अंग्रेजों से सहायता माँगी। वे इसके लिए ही तैयार बैठे थे। अंग्रेजों और मराठों के बीच प्रथम मराठा युद्ध (1775-82 ई0) हुआ जो 7 वर्षों तक चला किन्तु नाना फड़नवीस के कुशल नेतृत्व तथा मराठों की सैन्य शक्ति के आगे अंग्रेजों को अधिक सफलता न मिल सकी। अन्त में सालबाई नामक स्थान पर सन् 1782 ई0 में दोनों पक्षों के बीच सन्धि हो गई। इसके

अनुसार नारायण राव के नवजात पुत्र को पेशवा स्वीकार कर लिया गया। सन् 1800 ई0 में फड़नवीस की मृत्यु हो गई और मराठों पर आपसी संघर्ष के बादल मँडराने लगे।मराठों ने वेलेजली की सहायक संधि से अपने को दूर रखा था, किन्तु नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद सिन्धिया, होल्कर तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय में प्रमुख शक्ति बनने के लिए आपस में संघर्ष प्रारम्भ हो गया।होल्कर ने पेशवा बाजीराव द्वितीय तथा सिन्धिया की सेनाओं को पराजित कर दिया और पूना पर अधिकार कर लिया। पेशवा बाजीराव द्वितीय ने भागकर अंग्रेजों की शरण ली। अंग्रेजों ने सहर्ष पेशवा की सहायता करना स्वीकार किया। सहायता देने के पूर्व अंग्रेजों ने उसे सहायक संधि स्वीकार करने को बाध्य किया जिसके परिणामस्वरूप पेशवा का एकाधिकार समाप्त हो गया।परन्तु भोंसले तथा सिन्धिया को यह अपमान सहन नहीं हुआ और उन्होंने लार्ड वेलेजली के विरुद्ध द्वितीय मराठा युद्ध (1803 ई0 की घोषणा कर दी जिसमें अंग्रेजों की जीत हुई। अंग्रेजों ने उन्हें अपमानजनक संधियाँ करने के लिए विवश कर दिया जिसके अन्तर्गत दोनों मराठा सरदारों को अपने राज्य का काफी हिस्सा अंग्रेजों को देना पड़ा और उन्होंने अपने-अपने राज्यों में अंग्रेज रेजीडेण्ट रखना स्वीकार कर लिया।

इसके पश्चात कम्पनी ने होल्कर के विरुद्ध तृतीय मराठा युद्ध (1804-1805 ई0 छेड़ दिया। जिसमें अंग्रेज असफल रहे। दोनों के बीच 1806 ई0 में संधि हो गई।

यद्यपि मराठों की शक्ति कमजोर हो गई थी फिर भी वे अंग्रेजों से लोहा लेने के लिये संयुक्त मोर्चा बनाने को तैयार थे। पेशवा बाजीराव द्वितीय ने पूना स्थित अंग्रेज रेजीडेण्ट तथा नागपुर स्थित रेजीडेन्सी पर आक्रमण कर दिया। यह मराठों एवं अंग्रेजों के बीच का अंतिम युद्ध था, जो चतुर्थ मराठा युद्ध (1817 ई0) नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में मराठों की सम्मिलित सेना अंग्रेजी सेना से हार गयी। बाजीराव द्वितीय का पूना प्रदेश अंग्रेजी राज्य में विलय कर लिया गया। सिन्धिया और होल्कर के अधीन राजपूताना राज्य भी अंग्रेजी राज्य के अधीन हो गये। जो राज्य पूर्णतया अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत नहीं थे, वे भी अप्रत्यक्ष रूप से उनके नियंत्रण में थे।

डलहौजी की विलय नीति

सहायक संधि नीति द्वारा जिस तरह वेलेजली ने भारत के अनेक राजाओं को अपने नियंत्रण में कर लिया था उसी प्रकार लार्ड डलहौजी ने भी राज्यों को हड़पने की एक नीति अपनायी। इस नीति के अन्तर्गत उसने यह नियम घोषित किया कि

भारत के जिन-जिन राजाओं को कोई पुत्र न हो, वे अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी को गोद नहीं ले सकते थे। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार प्रत्येक सन्तानहीन व्यक्ति को गोद लेने का अधिकार प्राप्त है किन्तु डलहौजी ने अंग्रेजी राज्य के अधीन किसी सन्तानहीन भारतीय नरेश को गोद लेने का अधिकार निषेध कर दिया

नाना साहब

इस नीति के अन्तर्गत सतारा, नागपुर, उदयपुर, जैतपुर, सघाट, सम्भलपुर तथा झाँसी के राज्यों को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। डलहौजी ने यह भी नीति अपनायी कि भारतीय नरेशों को दी जाने वाली पेंशन तथा उपाधियों से भी वंचित कर दिया जाय। कर्नाटक के नवाब और तंजौर के राजा तथा नाना साहब की पेंशन और उपाधियाँ समाप्त कर दी गयीं।

अंग्रेजों का अवध, बनारस, रुहेलखण्ड तथा पिण्डारियों से युद्ध

युद्ध, वर्ष	किनके बीच	युद्ध/विलय के कारण	परिणाम	संधि/प्रस्ताव
अवध (१८५६ ई०)	लार्ड डलहौजी तथा नवाब वाजिद अली शाह	नवाब वाजिद अली शाह पर कुशासन तथा अकर्मण्यता का आरोप	अवध राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।	□ फैजाबाद संधि अंग्रेजों को साढ़े बाइस लाख रुपये कर के रूप में। □ नवाब कलकत्ता में नजरबंद जीवन निर्वाह के लिए १२ लाख सालाना पेंशन दी गयी।
रुहेलखण्ड (१७७४ ई०)	अंग्रेज (अवध के नवाब के मित्रवत) तथा रुहेला सरदार हाफिज रहमत खाँ	रुहेला सरदार द्वारा अवध के नवाब को रु० ४० लाख देने से मना कर देना।	हाफिज रहमतखाँ मारे गये। रुहेलखण्ड के अधिकांश भाग को अवध राज्य में मिलाना, शेष भाग पर रामपुर की रियासत स्थापित होना।	
बनारस (१७८० ई०)	वारेन हेस्टिंग्स तथा राजा चेत सिंह	अंग्रेजों द्वारा फैजाबाद संधि को तोड़ना तथा अधिक धन, घुड़सवार तथा बंदूकची की मांग, मना करने पर चेतसिंह को ५० लाख रुपये का जुर्माना	दोनों के बीच संघर्ष हुआ। हेस्टिंग्स द्वारा विद्रोह का दमन कर दिया गया।	□ चेतसिंह के भतीजे को राजा बनाया गया। □ साढ़े बाईस लाख रुपये के वार्षिक कर को बढ़ाकर चालीस लाख कर दिया गया।
पिण्डारियों (लूटमार करने वाले लोग) से युद्ध (१८१७–१८१८ ई०)	वारेन हेस्टिंग्स तथा पिण्डारी के अमीरखाँ, करीमखाँ, वासिल मुहम्मद तथा चीतू	पिण्डारियों के छापामार युद्ध से परेशान होकर	बहुत से पिण्डारी मारे गये।	□ अमीरखाँ ने अंग्रेजों की शरण ली उसे टोंकी की जागीर प्रदान कर दी गयी। □ करीमखाँ ने भी शरण ली उसे गोरखपुर जिले की जागीर मिली।

अंग्रेजों का नेपाल तथा बर्मा (म्यांमार) से युद्ध

युद्ध, वर्ष	किनके बीच	युद्ध/विलय के कारण	परिणाम	संधि/प्रस्ताव
नेपाल युद्ध	वारेन हेस्टिंग्स तथा गोरखा वारेन हेस्टिंग्स	सन् १८१४ ई० में गोरखों द्वारा अंग्रेजों के अधीन बस्ती जिले के निकट शिवराज और बुटवल क्षेत्रों पर अधिकार।	अंत में गोरखे पराजित हुए	* १८१६ ई० में सिगौली की संधि– अंग्रेजों को कुमायूँ, गढ़वाल क्षेत्र, हिमालय पर्वत का तराई क्षेत्रों का मिलना। * गोरखों द्वारा सिक्किम पर अधिकार छोड़ना। * नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में एक अंग्रेज रेजीडेण्ट रहने लगा।
बर्मा का प्रथम युद्ध (१८२४–१८२६ ई०)	वारेन हेस्टिंग्स और बर्मा	बर्मा द्वारा अंग्रेजों से चटगाँव, ढाका, मुर्शिदाबाद तथा कासिम बाजार क्षेत्र की मांग	अंग्रेजों की विजय, रंगून पर अधिकार।	यान्दबू संधि सन् १८२६ – * अंग्रेजों को अराकान तथा तेनासरिम के प्रदेश प्राप्त हुए। * मणिपुर को स्वतन्त्र राज्य घोषित कर दिया गया। * बर्मा और अंग्रेजों के मध्य व्यापारिक समझौता।
बर्मा का द्वितीय युद्ध (१८५२ ई०)	अंग्रेज (डलहौजी) तथा बर्मा	अंग्रेज व्यापारियों द्वारा सरकार के नियमों का उल्लंघन।	बर्मा पराजित हुआ	* मर्तबान और रंगून पर अंग्रेजों का अधिकार। * बर्मा का सम्पूर्ण दक्षिणी भाग अंग्रेजों के अधिकार में आ गया।

अंग्रेजों का अफगान, सिन्ध तथा सिखों से युद्ध

युद्ध, वर्ष	किनके बीच	युद्ध/विजय के कारण	परिणाम	संधि/प्रस्ताव
अफगान युद्ध (१८२२ व १८४२ ई०)	अंग्रेज तथा अफगान	अंग्रेजों को रूसी आक्रमण का भय क्योंकि रूस एशिया में अपने प्रभाव को बढ़ा रहा था।	अंग्रेज पराजित (१८२२ में) अफगान पराजित (१८४२ में)	• काबुल को लूट लिया गया। • नगर के विशाल भवनों को तोप से उड़ा दिया गया।
सिन्ध युद्ध (१८४३ ई०)	अंग्रेज और सिन्ध के शासक (अमीर)	अंग्रेजों द्वारा सिंध प्रांत को अपने राज्य में मिलाने पर	सिंध के अमीर पराजित हुए	• सिंध प्रांत को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।
प्रथम सिख युद्ध (१८४५ ई०)	अंग्रेज और सिख	सिख सेना ने सतलज नदी पार करके अंग्रेजी राज्य पर आक्रमण किया।	सिख सेना पराजित हुई (पंजाब के कुछ विश्वासघाती सेनानायक अंग्रेजों से जा मिले थे)	• लाहौर में संधि करनी पड़ी। • जालंधर तथा सतलज और व्यास नदियों का दोआब अंग्रेजी राज्य में मिल गया। • युद्ध के हर्जाने के रूप में सिखों को डेढ़ करोड़ रुपया देना पड़ा। • इस धनराशि को न दे पाने के कारण पंजाब राज्य का जम्मू, कश्मीर भाग देना पड़ा।
द्वितीय सिख युद्ध (१८४८ ई०)	अंग्रेज और सिख	अंग्रेजों द्वारा सिखों के मुलतान के दुर्ग पर अधिकार	सिख सेना पराजित हुई।	• अंग्रेजों का पंजाब पर पूर्ण अधिकार हो गया।

अंग्रेजों की सफलता के कारण

भारत में अंग्रेजों की सफलता में अनेक कारक सहायक सिद्ध हुए।

भारत में अंग्रेजों की विजय बंगाल से प्रारम्भ हुई। बंगाल एक अत्यन्त उपजाऊ भू-भाग था। वहाँ शासन स्थापित हो जाने से उन्हें राजस्व का लाभ तो मिला ही साथ ही उनका व्यापार भी बढ़ा। इससे कम्पनी की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई।

अंग्रेजों की सैन्य शक्ति बहुत उन्नत थी। उनके सैनिक अपेक्षाकृत अधिक कुशल एवं प्रशिक्षित थे। उनके पास शस्त्र न केवल प्रचुर मात्रा में थे बल्कि वे उच्च तकनीक पर भी आधारित थे।

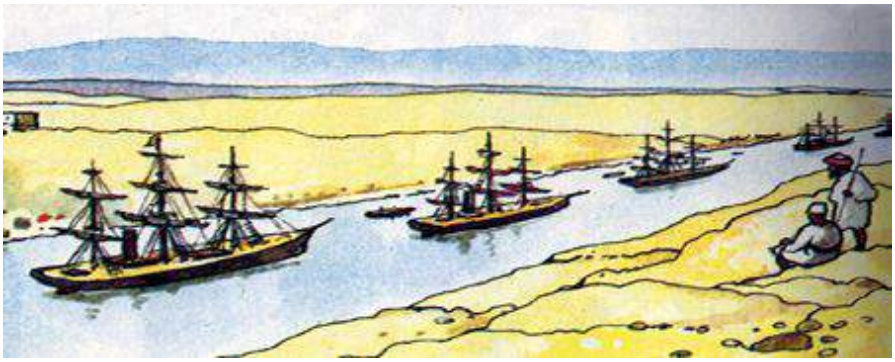

जहाजी बेड़ा

ब्रिटिश कालीन चाँदी का सिक्का जिसमें महारानी विक्टोरिया की तस्वीर बनी है, 1862

- उनके पास जहाजी बेड़ा था लेकिन भारतीयों के पास इसका अभाव था। ये जहाजी बेड़े इंग्लैण्ड से आते रहते थे, इस कारण उनके पास रसद एवं सैनिकों का कभी भी अभाव नहीं रहता था।
- अंग्रेज अधिकारी कूटनीति का सहारा लेकर भारत में शासन करते रहे जैसे- वेलेजली की सहायक संधि नीति व डलहौजी की विलय नीति। उन्होंने ''फूट डालो और राज करो'' की कूटनीति भी मनवाई।
- भारत में एक कुशल नेतृत्व का अभाव था। राजा आपस में लड़ते रहते थे।

दो शासकों में जब कभी कोई संघर्ष या विवाद होता था तो वे एक पक्ष की सहायता करके दूसरे को पराजित करते थे और उचित अवसर आने पर अपने पक्ष वाले शासक के भी विरुद्ध हो जाया करते थे।

शब्दावली–

पिण्डारी– लुटेरों का एक दल, जिसमें हिन्दू एवं मुसलमान दोनों शामिल थे।

रेजीडेंट– सहायक संधि स्वीकार करने वाले देशी राज्यों के दरबार में रहने वाला ब्रिटिश संघ अधिकारी।

अभ्यास

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) विलय नीति का सम्बन्ध है–

(क) नाना साहब से (ख) डलहौजी से

(ग) टीपू सुल्तान से (घ) हैदर अली से

2. पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठा संघ को पराजित किया–

(क) अहमदशाह अब्दाली ने (ख) नादिरशाह ने

(ग) शाहशुजा ने (घ) जमाल खाँ ने

2. अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध किसके बीच हुआ ?

(2) टीपू सुल्तान ने श्री रंग पट्टन की संधि किस सन् में की ?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(1) प्रथम मराठा युद्ध के बारे में लिखिए ?

(2) सहायक संधि क्या थी ?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

(1) डलहौजी की राज्य हड़पने की नीति क्या थी ? इस नीति के क्या उद्देश्य थे ?

प्रोजेक्ट वर्क

- तिथि क्रमानुसार दक्षिण भारत के उन युद्धों का चार्ट बनाइए जिसके द्वारा अंग्रेजी राज्य स्थापित हुआ।